



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

MAINS WALLAH

प्रश्नोत्तर शूखला

सामान्य अध्ययन-।

यूपीएससी के पाठ्यक्रम तथा प्रश्नों की नवीन प्रवृत्तियों पर^{आधारित 250 से अधिक प्रश्नों का संकलन}

विषय-सूची

भारतीय विरासत, संस्कृति और इतिहास 1-176

1. भारतीय संस्कृति	3
2. आधुनिक इतिहास	83
3. स्वतंत्रता संग्राम	109

भारत का भूगोल 177-322

1. महत्वपूर्ण भूभौतिकीय घटना	179
2. भारतीय भूगोल	222
3. उद्योगों की अवस्थिति	249
4. विश्व भौतिक भूगोल	270
5. भूगोल से संबंधित समसामयिक मुद्दे	282
6. विविध	312

भारतीय समाज 323-374

1. भारतीय समाज की प्रमुख विशेषताएँ	325
2. भारत की विविधता	341
3. वैश्वीकरण और शहरीकरण	349
4. सांप्रदायिकतावाद और क्षेत्रवाद	367

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय समाज में सामाजिक पदानुक्रम और अभिशासन को समझने में महापाषाणकालीन संरचनाओं के महत्व पर चर्चा कीजिए। ये महापाषाणकालीन स्मारक उस काल की सांस्कृतिक गत्यात्मकता को समझने में किस प्रकार से सहायता करते हैं? (15 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- प्राचीन भारतीय समाज में सामाजिक पदानुक्रम और अभिशासन को समझने में महापाषाणकालीन संरचनाओं के महत्व के बारे में लिखिए।
- बताइए कि किस प्रकार ये महापाषाणकालीन स्मारक उस काल की सांस्कृतिक गत्यात्मकता को समझने में सहायता करते हैं।

उत्तर: महापाषाणकालीन संरचनाएँ, पत्थर के विशाल स्मारक हैं, जिन्हें दुनिया भर के प्राचीन लोगों द्वारा बनाया गया था। वे भारत के भी कई हिस्सों में पाए जाते हैं, जिनमें दक्कन का पठार, दक्षिणी तट और पूर्वी हिमालय के क्षेत्र शामिल हैं। प्राचीन भारत में ये संरचनाएँ, अमूल्य ऐतिहासिक चिह्न हैं, जो अपने समय के सामाजिक पदानुक्रम, अभिशासन और सांस्कृतिक गत्यात्मकता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।

प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक पदानुक्रम और अग्निशासन को समझने में महापाषाणकालीन संरचनाओं का महत्व:

सामाजिक पदानुक्रम को समझने में महत्व:

- प्रस्थिति विभेदीकरण:** कर्नाटक में ब्रह्मगिरि जैसी महापाषाणकालीन संरचनाओं की अलग-अलग जटिलताएँ सामाजिक स्तरीकरण का प्रमाण हैं, जहाँ अभिजात वर्ग को प्रायः अपेक्षाकृत विशाल समाधियों में दफनाया जाता था।
- पारिवारिक वंशावली:** विहार के राजगीर जैसे स्थानों पर, ये संरचनाएँ प्रायः पारिवारिक समाधियों के रूप में मिली हैं। ये पारिवारिक समाधियाँ, आमतौर पर विशाल और अधिक संरक्षित होते थे, जो प्राचीन भारतीय समाज में वंशावली के महत्व की ओर इशारा करते हैं।
- कलाकृतियाँ:** मृतक के साथ दफन की गई कलाकृतियाँ, उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में काफी जानकारी देती हैं। कर्नाटक के हल्लूर में समाधियों में मिट्टी के बर्तनों से लेकर मूल्यवान अस्त्र और आभूषण तक सब कुछ पाया गया है।
- भौगोलिक स्थिति:** इन महापाषाण संरचनाओं की अवस्थिति सामाजिक पदानुक्रम के बारे में भी संकेत देती है।

उदाहरण: नागपुर के जूनापानी महापाषाण कालीन स्थल में समाधियाँ उच्च क्षेत्रों पर अवस्थित हैं। यह इस बात का प्रतीक हो सकता है कि मृतक का सामाजिक स्तर ऊँचा था।

- धार्मिक महत्व:** महापाषाणों में उकेरे गए प्रतीक, विशेष रूप से तमिलनाडु में, दफनाए गए लोगों की धार्मिक संबद्धता या प्रथाओं को प्रकट करते हैं। ये धार्मिक चिह्न केवल आध्यात्मिक विश्वासों के अभिलेख के रूप में काम करते हैं, बल्कि धार्मिक पदानुक्रम के एक रूप का भी संकेत देते हैं।

अग्निशासन प्रणाली को समझने में महत्व:

- संसाधन आवंटन:** केरल में कुडक्कल्लू परम्परा जैसी जगहों पर देखी गई महापाषाण कालीन संरचनाओं की जटिलता, शासक वर्ग के संगठनात्मक कौशल के बारे में बहुत कुछ बताती है। इस तरह के निर्माण से प्रशासनिक नियोजन और संसाधन प्रबंधन के उन्नत स्तर का पता चलता है।
- व्यापारिक संबंध:** मास्की जैसे कुछ महापाषाण स्थलों से ताँबे और अर्द्ध-कीमती पत्थरों से बनी वस्तुएँ मिली हैं, जो स्थानीय रूप से नहीं उपलब्ध नहीं थीं। समाधियों के अंदर इन आकर्षक एवं विजातीय सामग्रियों की मौजूदगी दूरगामी व्यापार संबंधों और ऐसे व्यापार संबंधों की सततता में अभिशासन की भूमिका का संकेत देती है।
- कानूनी प्रणालियाँ:** कुछ महापाषाण कालीन संरचनाओं, विशेष रूप से ब्रह्मगिरि में पाए गए शिलालेखों में प्राचीन संहिताओं या सामाजिक नियमों के साक्षय मिलते हैं। इससे एक शासन संरचना का पता चलता है जो न केवल कानून बनाती थी बल्कि उन्हें लागू भी करती थी।
- प्रादेशिक चिह्न:** दक्कन के पठार में कई महापाषाण कालीन संरचनाएँ, रणनीतिक रूप से क्षेत्रीय सीमाओं को चिह्नित करने के लिए अवस्थित हैं। यह दोहरा उद्देश्य पूरा कर सकता है। संसाधनों पर दावा करना और आक्रमणों को रोकना, जिससे स्थिर एवं प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित हो सके।
- सार्वजनिक कार्य:** विदर्भ जैसे क्षेत्रों में सामुदायिक अंत्येष्टि स्थल सामूहिक कल्याण की अवधारणा को दर्शाते हैं। इस तरह के सामूहिक प्रयास एक ऐसी शासन प्रणाली की ओर संकेत करते हैं जो सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देती है और समाज की व्यापक भलाई के लिए सार्वजनिक कार्यों को गति प्रदान कर सकती है।

सांस्कृतिक स्थिति को समझने के लिए प्रमुख ऐतिहासिक विद्वाँ के रूप में महत्व:

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान: माहुर्झरी जैसे महापाषाणिक स्थलों में वास्तुकला की विविधता न केवल क्षेत्रीय शैलियों को दर्शाती है, बल्कि अन्य संस्कृतियों के प्रभावों को भी दर्शाती है। यह एक ऐसी संस्कृति का संकेत हो सकता है जो बाहरी प्रभावों के लिए खुली थी और आपसी आदान-प्रदान में संलग्न थी।
- आनुष्ठानिक प्रथाएँ: हीरे बेनकेल में, महापाषाणिक पत्थरों की व्यवस्था विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों का संकेत देती है। यह जीवन, मृत्यु और परलोक के बारे में कुछ मान्यताओं को दर्शाता है, जो समाज की आध्यात्मिक मानसिकता के संदर्भ में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- खगोलीय ज्ञान: कर्नाटक के बायसी में महापाषाणिक संरचनाओं का खगोलीय घटनाओं के साथ संरेखण, खगोल विज्ञान की उन्नत समझ को दर्शाता है। यह उनके कैलेंडर सिस्टम, नेविगेशन विधियों और शायद धार्मिक अनुष्ठानों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
- स्थानीय लोककथा: नगालैंड जैसे लोककथा-समृद्ध क्षेत्रों में महापाषाणिक संरचनाएँ, पीढ़ियों से चली आ रही मौखिक परंपराओं और मिथकों की हमारी समझ को और अधिक गहरा करती हैं।
- मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया: मेघालय के माफलांग में, महापाषाणिक संरचनाओं के निर्माण के लिए स्थानीय पत्थरों के उपयोग से यह पता चलता है कि समाज अपने ताल्लुलिक पर्यावरण के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करता था, जो एक प्रकार की स्थायी जीवन शैली को दर्शाता है।
- कलात्मक अभिव्यक्ति: कोडाक्कल्लू परम्बू में मेगालिथ में पाए गए नक्काशी और शिलालेख कलात्मक संवेदनशीलता को दर्शाते हैं, शायद समाज के भीतर कारीगर वर्गों की उपस्थिति की ओर भी इशारा करते हैं। यह उस समय के लोगों की कला की सुंदरता का प्रतीक है।
- कृषि पद्धतियाँ: केरल में उपजाऊ भूमि के साथ महापाषाणिक संरचनाओं की निकटता से यह संकेत मिलता है कि समुदाय कृषि पर निर्भर था, जो उनकी कृषि पद्धतियों और संभवतः उनकी फसल के विकल्पों को भी दर्शाता है।

महापाषाणिक संरचनाएँ अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। इन स्मारकीय संरचनाओं के अध्ययन से प्राचीन भारतीय समाज की अधिक समृद्ध एवं अधिक सूक्ष्म समझ प्राप्त होती है, जो पाठ्य विवरणों के लिए कभी सहायक और कभी चुनौतीपूर्ण होती है।

प्रश्न 2. भारत में मृदभांड निर्माण का इतिहास समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल में भारत में मृदभांडों के विकास पर चर्चा कीजिए, और इसमें हुए प्रमुख तकनीकी तथा शैलीगत परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए। (15 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- प्राचीन काल में भारत में मृदभांडों के विकास पर प्रकाश डालिए और उसमें हुए प्रमुख तकनीकी एवं शैलीगत परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: मृदभांड बनाने की कला, मिट्टी को आकार देने और उच्च तापमान पर पकाने की कला है, जिससे बर्तन तथा मूर्तियाँ जैसी कठोर, टिकाऊ एवं प्रायः अलंकृत वस्तुएँ बनाई जाती हैं। भारत में मृदभांडों का इतिहास देश की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत एवं कलात्मक विरासत का प्रमाण है। यह यात्रा कलात्मक अभिव्यक्ति, शिल्प कौशल और सांस्कृतिक महत्व के विकास को दर्शाती है, जो इसे भारत के सांस्कृतिक तने-बाने का एक जीवंत तथा अभिन्न अंग बनाती है।

प्राचीन काल में भारत में मृदभांडों का विकास - तकनीकी और शैलीगत परिवर्तन:

- 10,000 ईसा पूर्व:**
 - नवपाषाण काल के प्रारंभिक चरण में, मृदभांड मुख्य रूप से हाथ से बनाए जाते थे, कारीगर बर्तनों और पात्रों को आकार देने के लिए साँचे के द्वारा निर्माण (मोलिंग) तकनीक का उपयोग करते थे। यह मिट्टी के बर्तनों के उत्पादन के लिए एक बुनियादी दृष्टिकोण को दर्शाता है।
 - नवपाषाण काल के पश्चात, मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए धूर्णशील चाक (फुट-ब्हील) तकनीक के रूप में एक महत्वपूर्ण नवाचार हुआ। इस तकनीक की शुरुआत ने अधिक कुशल और सुसंगत मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया।
 - नवपाषाण काल के बर्तनों में आमतौर पर चमक और जटिल चित्रकारी या सजावट का अभाव था। इसके बजाय, इसमें अधिक उपयोगितावादी और सीधी-साधी शैली थी, जिसमें सौंदर्यशास्त्र से ज्यादा कार्यक्षमता पर ज़ोर दिया जाता था।
 - इस अवधि के मिट्टी के बर्तनों में धूसर मृदभांड और मैट प्रेस्ट ब्रेस्ट वेयर शामिल हैं, जो प्रकृति में उपयोगितावादी थे, जिनका उपयोग मुख्य रूप से भंडारण तथा दैनिक कार्यों के लिए किया जाता था।
- ताप्रपाषाण काल (2500-700 ईसा पूर्व):**
 - ताप्रपाषाण काल में विभिन्न प्रकार के मृदभांडों का निर्माण हुआ, जिनमें काले और लाल मृदभांड (BRW), गेरूये मृदभांड (OCP), तथा काले-और-लाल मृदभांड शामिल थे, जिनमें शैलियों एवं तकनीकों की विविधता देखने को मिली।
 - काले और लाल मृदभांड (BRW) में रंगों तथा रेखीय डिजाइनों के संयोजन से लेकर गेरूये मृदभांड (OCP) के सादे डिजाइनों तक, स्पष्ट शैलीगत विभेदन किया जाता था, जो मृदभांडों के उत्पादन के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण का संकेत देता है।
 - ताप्रपाषाण युग में मृदभांड निर्माण में तकनीकी प्रगति देखी गई, साथ ही मृदभांडों को आग में पकाने और उन पर चित्रकला तकनीकों का भी विकास हुआ। जैसा कि काले और लाल मृदभांडों (BRW) में देखा गया है।

सिंधु धाटी सभ्यता (3000-1700 ईसा पूर्व):

- सिंधु धाटी सभ्यता ने चाक से बने और आग में पके हुए मृदभांडों की ओर महत्वपूर्ण बदलाव प्रदर्शित किया, जिससे मृण्पात्रों के उत्पादन में तकनीकी प्रगति पर प्रकाश डाला गया।
 - इस सभ्यता ने मृदभांडों में तकनीकी विशेषज्ञता भी दिखाई, जिसमें विशिष्ट प्रयोजनों के लिए नक्काशीदार मृदभांडों का प्रयोग किया जाता था, जैसे कि चपटी सतह वाले (पैन बेस) और पेय पदार्थ छानने के लिए छिप्रित मृदभांडों का प्रयोग किया जाता था।
 - जटिल ज्यामितीय और पशु डिजाइनों के साथ काले रंग के चित्रित मृदभांडों का प्रचलन एक शैलीगत विकास का संकेत था, जो प्राचीन भारतीय मृदभांडों में कलात्मक विकास को दर्शाता है।
 - हड्ड्याकालीन मृदभांडों के उदाहरणों में काले-भूरे चमकीले मृदभांड, धूसर मृदभांड (GW) और चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) शामिल हैं।
- वैदिक काल (1500-600 ईसा पूर्व):
 - प्रारंभिक वैदिक काल: प्रारंभिक वैदिक काल में गेस्ल्यै मृदभांड (OCP) प्रचलित थे। यह मृदभांडों के प्रति अपेक्षाकृत सरल और उपयोगितावादी दृष्टिकोण को दर्शाता है।
 - उत्तर वैदिक काल:
 - ◆ उत्तर वैदिक काल में मृदभांड निर्माण की तकनीक और शैली में महत्वपूर्ण विकास हुआ, जिसमें चार अलग-अलग मिट्टी के बर्तनों को अपनाया गया- काले और लाल मृदभांड (BRW), काले स्लिप्प मृदभांड, चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) और लाल मृदभांड (RW)। इस विविधीकरण ने मृदभांडों की शैलियों और तकनीकों में महत्वपूर्ण बदलाव की शुरुआत की।
 - ◆ सबसे उल्लेखनीय तकनीकी परिवर्तनों में से एक उन्नत चाक-निर्मित, मृदभांडों की शुरुआत थी, जिसका उदाहरण चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) है। यह नवाचार अधिक उन्नत मृदभांड उत्पादन विधियों की ओर बदलाव को दर्शाता है।
 - ◆ इस अवधि में सरल गेस्ल्यै मृदभांड (OCP) से लेकर अधिक जटिल और कलात्मक शैलियों तक इनका शैलीगत विकास हुआ।
- उदाहरण:** चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) में धूसर रंग होता था और उन्हें लाल या काले रंग में ज्यामितीय डिजाइनों से सजाया जाता था, जिनमें सौंदर्य एवं रचनात्मकता पर जोर दिया जाता था।
- मौर्य काल:
 - मौर्य काल में मृदभांड निर्माण हेतु चाक का व्यापक रूप से उपयोग किया गया, जो मृदभांड निर्माण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति का प्रतीक है।
 - तकनीकी विकास के कारण मृदभांडों की शैलियों में अधिक एकरूप आकार और आकृतियाँ आईं।
 - उत्तरी काले पॉलिश मृदभांड (NBPW) के उत्पादन में उन्नत तकनीकें शामिल थीं, जो उच्च स्तर की परिसज्जा और एक विशिष्ट चमकदार काला रंग प्रदान करती थीं। यह इस अवधि के तकनीकी कौशल के स्तर को इंगित करता है।
 - गुप्त काल:
 - गुप्त काल में लाल मृदभांडों को एक विशिष्ट प्रकार के मृदभांड के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें चटक लाल रंग प्राप्त करने के लिए आग में पकाने की उन्नत तकनीक और मिट्टी की संरचना का प्रदर्शन किया गया।
 - मृदभांडों को प्रायः खास व्यक्तियों द्वारा उकेरा जाता था (उथले कटों या नक्काशी से सजाया जाता था), जो मृदभांड निर्माण की तकनीक में कौशल के स्तर को दर्शाता है।
 - इस युग में मृदभांडों में भी महत्वपूर्ण शैलीगत परिवर्तन हुआ, जिसमें जटिल परिष्करणों और कलात्मक अभिव्यक्तियों पर जोर दिया गया, जो मृण्पात्र निर्माण की कलात्मकता में विकसित हो रही सौन्दर्यात्मक संवेदनशीलता को दर्शाता है।
- प्राचीन काल में भारतीय मृदभांडों का विकास, नवपाषाण काल के अल्पविकसित रूपों से लेकर मौर्य काल के परिष्कार तक, कारीगरों के कौशल को दर्शाता है, जो विशिष्ट तकनीकी प्रगति और शैलीगत बदलावों का प्रतीक है। मिट्टी के बर्तनों के विकास का यह समृद्ध ताना-बाना भारत की विविध और जीवंत सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण है, जो सदियों से चली आ रही रचनात्मक भावना की झलक पेश करता है।
- अतिरिक्त जानकारी:**
- सिंधु धाटी सभ्यता:**
- बहुरंगी मिट्टी के बर्तन, जिनमें अनेक रंग और जटिल स्वरूप होते थे, अपेक्षाकृत दुर्लभ थे, लेकिन प्राचीन भारत में मिट्टी के बर्तनों की सजावट के लिए अधिक परिष्कृत दृष्टिकोण के उदाहरण थे।
 - साधारण मिट्टी के बर्तनों, मुख्यतः लाल मिट्टी के बर्तनों का प्रचलन, व्यावहारिक, उपयोगितावादी मिट्टी के बर्तनों पर प्रारंभिक पहल को दर्शाता है, जो दैनिक उपयोग के लिए मिट्टी के बर्तनों के निर्माण की तकनीक का संकेत देता है।

प्रश्न 3. रॉक-कट वास्तुकला (Rock-Cut Architecture) प्रारंभिक भारतीय कला और इतिहास के बारे में हमारे ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है। चर्चा कीजिए। (10 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- चर्चा कीजिए कि किस प्रकार रॉक-कट वास्तुकला प्रारंभिक भारतीय कला और इतिहास के बारे में हमारे ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है।

उत्तर: भारत में रॉक-कट वास्तुकला प्रारंभिक भारतीय कला और इतिहास के बारे में जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो प्राचीन भारतीय सभ्यताओं के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में अद्वितीय जानकारी प्रदान करती है। इस स्थापत्य रूप में मठ, मंदिर और प्राकृतिक चट्टान संरचनाओं से सीधे काटी गई अन्य संरचनाएँ शामिल हैं, जो उस समय के तकनीकी कौशल तथा कलात्मक संवेदनशीलता का मूल्यवान प्रमाण प्रदान करती हैं।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव:

बौद्ध प्रभाव:

- प्रारंभिक बौद्ध संरक्षण: मौर्य और सातवाहन काल के दौरान बौद्ध संरक्षण के तहत शुरुआत में रॉक-कट वास्तुकला का उदय हुआ, जो प्रारंभिक मठ के जीवन की सादगी एवं तपस्या को दर्शाती है।

उदाहरण: बराबर की गुफाएँ, बिहार

- बौद्ध कला का विकास: अजंता और एलोरा जैसी बौद्ध गुफाएँ कलात्मक परिदृश्य में प्रगति को दर्शाती हैं, जिनमें जटिल नक्काशी, स्तूप, चैत्य हॉल और विहार शामिल हैं, जो बौद्ध कला तथा प्रतिमा विज्ञान के विकास को दर्शाते हैं।

उदाहरण: अजंता गुफाएँ, महाराष्ट्र

- हिंदू और जैन योगदान: गुप्त और गुप्तोत्तर काल के दौरान, हिंदू तथा जैन संरक्षकों के योगदान से रॉक-कट वास्तुकला का विकास हुआ, जैसा कि महाराष्ट्र में भगवान शिव को समर्पित एलीफेंटा गुफा और बौद्ध, हिंदू एवं जैन गुफा मंदिरों के सामंजस्यपूर्ण एकीकरण को दर्शाने वाली एलोरा गुफाओं में देखा जा सकता है।

कलात्मक और तकनीकी प्रभाव:

- वास्तुकला तकनीक: रॉक-कट वास्तुकला का विकास अभियांत्रिकी और शिल्प कौशल में हुई प्रगति को दर्शाता है। बराबर जैसी प्रारंभिक गुफाओं की चट्टानें बहुत चमकीली हैं, जबकि एलोरा में कैलाश जैसी संरचनाएँ जटिल अभियांत्रिकी और कलात्मक विकास को प्रदर्शित करती हैं।

सामाजिक-आर्थिक संदर्भ:

- संरक्षण और समृद्धि: चट्टानों को काटकर बनाई गई संरचनाएँ, प्राचीन भारत में सामाजिक-आर्थिक संदर्भ और संरक्षण के महत्व को दर्शाती हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण वाली उदयगिरि की गुफाएँ, गुप्त काल के दौरान इन प्रयासों के लिए राजनीतिक और आर्थिक समर्थन को दर्शाती हैं।

ऐतिहासिक दर्शावेज़:

- शिलालेख और नक्काशी: महाराष्ट्र में नासिक की गुफाओं जैसे स्थलों में प्राचीन भारत के बारे में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी देने वाले शिलालेख हैं, जो सातवाहन काल के राजनीतिक इतिहास और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का अध्ययन करने वाले इतिहासकारों के लिए अपरिहार्य प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकला प्रारंभिक भारतीय सभ्यता को उजागर करती है; धर्म, कला और समाज के बारे में अंतर्दृष्टि प्रकट करती है। संरक्षण के प्रयास और अंतर विषयक अनुसंधान इस धरोहर को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखते हैं।

प्रश्न 4. सिंधु घाटी सभ्यता ने वैज्ञानिक प्रगति और नगरीकरण के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत की, जो 500-600 ईसा पूर्व में महाजनपदों के उदय तक लगभग अदृश्य रहा। टिप्पणी कीजिए। (10 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान हुई वैज्ञानिक प्रगति पर चर्चा कीजिए।
- अगले भाग में सभ्यता के संदर्भ में नगरीकरण के तत्वों पर चर्चा कीजिए।
- अंत में चर्चा कीजिए कि महाजनपदों के युग में नगरीकरण के तत्व पुनः कैसे देखे गए (नगरीकरण का दूसरा चरण)।

उत्तर: हड्डपा या सिंधु घाटी सभ्यता, कांस्य युग की सभ्यता थी, जिसका सर्वाधिक विकसित चरण लगभग 2600 ईसा पूर्व से लेकर 1900 ईसा पूर्व तक था। हड्डपा सभ्यता ने भारतीय उपमहाद्वीप में वास्तुकला के आश्रयों से लेकर चिकित्सा और धातुकर्म विज्ञान तक वैज्ञानिक प्रगति एवं नगरीकरण की शुरुआत की।

हड्डपा सभ्यता के दौरान वैज्ञानिक प्रगति:

- भार और मापन: हड्डपा सभ्यता के लोगों ने पूरी सभ्यता के दौरान भार और माप की एक मानकीकृत प्रणाली का पालन किया।

उदाहरण: जगन के निम्न मूल्यवर्ग द्विआधारी संख्याओं में (1, 2, 4, 8, 16, 32, आदि 12,800 तक) थे, जबकि उच्च मूल्यवर्ग दशमलव प्रणाली में हुआ करते थे।

- धातुकर्म: सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने वैज्ञानिक तरीके से धातुओं के उपयोग की शुरुआत की। उन्होंने विभिन्न धातुओं का इस्तेमाल किया जैसे सोना, चाँदी, तांबा, लाजवर्द, फिरोजा, नीलम, अलबेस्टर, पन्ना आदि। कांस्य जैसे मिश्र धातु सामान्यतः चलन में थे।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई नृत्यांगना की कांस्य मूर्ति।
- जल प्रबंधन: सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान कृषि, जल निकासी प्रबंधन, घेरलू उपयोग आदि के उद्देश्य के लिए जल प्रबंधन तकनीकों में महत्वपूर्ण नवाचार हुए।

उदाहरण: हड्प्पावासियों ने जल की मौसमी उपलब्धता का लाभ उठाने के लिए नहरों/जल संजाल, कृत्रिम जलाशयों की एक विस्तृत प्रणाली विकसित की।
- चिकित्सा विज्ञान: हड्प्पा सभ्यता के लोगों ने चिकित्सा विज्ञान और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में काफी प्रगति की।

उदाहरण: कालीबंगन और लोथल में वेधन शल्य प्रक्रिया (ट्रैपनेशन) के साक्ष्य मिले हैं।
- गणित: हड्प्पा सभ्यता में संख्याओं की अवधारणा, संख्यात्मक प्रणाली, प्रतीक और जोड़ एवं गुणा करने की कला मौजूद थी।

उदाहरण: मानकीकृत ईंटों के साक्ष्य से पता चलता है कि हड्प्पावासी ज्यामिति और गणित में पारंगत थे।
- आग पर नियंत्रण रखने की योग्यता: हड्प्पा सभ्यता के लोगों ने आग पर नियंत्रण करने की वैज्ञानिक क्षमता प्रदर्शित की थी, क्योंकि वे पकी हुई ईंटें, मिट्टी के बर्तन आदि बनाने के लिए आग को नियंत्रित रूप में उपयोग करने में सक्षम थे।

हड्प्पा सभ्यता से ग्रुड़े नगरीकरण के तत्व:

- नियोजित शहर: हड्प्पा के शहरों में उन्नत शहरीकरण और नियोजन के तत्व दिखाई देते हैं।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो में समकोणीय जालीनुमा (ग्रिड) प्रतिरूप पर व्यवस्थित सीधी रेखा वाली इमारतों के साथ एक व्यवस्थित नियोजन था। हड्प्पा से पहले, कुछ ताप्रापाषाण संस्कृतियों में शहरी तत्व दिखाई दिए हैं, लेकिन वे बहुत सीमित ही रहे।
- समृद्ध व्यापार और वाणिज्य: समृद्ध व्यापार और वाणिज्य, नगरीकरण का एक महत्वपूर्ण संकेत है। हड्प्पा सभ्यता व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में श्रेष्ठता को प्रदर्शित करती है। इसकी पुष्टि हड्प्पा नगरों में पाई गई अनेक मुहरों से होती है।
- शहरी/नगर पालिका की सुविधाएँ: शहरों में विभिन्न नगर पालिका सेवाएँ थीं जैसे अच्छी तरह से बनाई गई जल निकासी प्रणाली/सीवरेज प्रणाली (कॉर्बल तकनीक के साथ); अपशिष्ट संग्रह प्रणाली, सार्वजनिक संरचनाएँ (जैसे विशाल स्नानागार) और भंडारण संरचना, जिसमें अन्नागार (हड्प्पा में पाया गया) शामिल हैं।
- आधुनिक वास्तुकला और सिविल अभियांत्रिकी: हड्प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल आदि शहरों में किले, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, गोदी (dockyard) आदि जैसी संरचनाएँ हड्प्पा लोगों की अद्वितीय और जटिल अभियांत्रिकी कौशल का प्रमाण हैं।
- संपर्कशीलता/परिवहन: सिंधु घाटी सभ्यता में शहरी केंद्र, अंतरेशीय और समुद्री दोनों मार्गों से अच्छी तरह से जुड़े हुए थे।

उदाहरण: लोथल में ज्वारीय बंदरगाह, साक्ष्य यह भी बताते हैं कि अंतरेशीय संपर्क के लिए पहिएदार गाड़ियों का उपयोग किया जाता था।

नगरीकरण का द्वितीय वरण: महाजनपद काल

सिंधु सभ्यता के पतन के बाद, भारतीय उपमहाद्वीप में गंगा घाटी में नगरीकरण के दूसरे चरण की शुरुआत हुई, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व में आरंभ हुआ। इस अवधि के दौरान लोहे का व्यापक रूप से उपयोग हुआ, जिसने कृषि विकास में सहायता की।

- कृषि अधिशेष: लौह क्रांति और धान की कृषि से अधिशेष उत्पादन हुआ; जिससे उत्पादन केंद्र, नगर केंद्रों में बदल गए।
- बाह्य व्यापार: डेरियस प्रथम (फारसी शासक) और सिंकंदर की भूमिका के कारण उत्तरापथ सीधे रेशम मार्ग से जुड़ गया। इससे भारत, रेशम मार्ग के साथ होने वाले आकर्षक व्यापार का एक पक्ष बन गया।
- आंतरिक व्यापार: कृषि की अधिकता के परिणामस्वरूप गहपति (धनी किसान) का उदय हुआ। इससे अर्थव्यवस्था में माँग पैदा हुई और आंतरिक वाणिज्य को बढ़ावा मिला।
- कस्बों और शहरों का उदय: अंगुत्तर निकाय (बौद्ध ग्रंथ) और भगवती सूत्र (जैन ग्रंथ) में कस्बों तथा शहरी केंद्रों की तीन श्रेणियों का उल्लेख है-
 - राजगृह, श्रावस्ती, कौशांबी और चंपा जैसे राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र।
 - आर्थिक महत्व के आधार पर उज्जैन और तक्षशिला जैसे व्यापार एवं वाणिज्य केंद्र।
 - पवित्र स्थल, जहाँ प्रायः लोग विभिन्न आनुष्ठानिक उद्देश्यों हेतु एकत्र हुआ करते थे। जैसे - वैशाली।
- मुद्रा प्रणाली: मुद्रा प्रणाली के रूप में आहत सिक्कों की शुरुआत, वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित ग्रामीण सभ्यता के शहरी सभ्यता में परिवर्तन को दर्शाता है, जहाँ व्यापार और अन्य आर्थिक गतिविधियों में मुद्रा की अपनी भूमिका थी।

उदाहरण: मौर्य युग के सिक्के और मुद्रा।
- शिल्पकला का उदय: नगरों में कला और शिल्पकला में पूरी तरह से संलग्न एक वर्ग सक्रिय था। चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य और संगीत जैसी कलाओं का विकास हुआ।

उदाहरण: वैशाली के सद्वाम पुत्र में कुम्हारों की 500 से अधिक दुकानें थीं। इससे व्यापारिक संघों की शुरुआत हुई। यद्यपि प्राचीन भारत में हमने नगरीकरण और वैज्ञानिक विकास के कई चरण देखे, लेकिन सिंधु घाटी सभ्यता ने इसके शिखर को दर्शाया। इसकी समृद्ध और नवीन शहरी नियोजन पद्धतियाँ, वैज्ञानिक प्रगति में उन्नति, इसके सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक रहीं, जिसने इसे अपने समय की सबसे प्रगतिशील सभ्यताओं में से एक बना दिया, जो आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

प्रश्न 5. शहरी नियोजन, जल प्रबंधन और पर्यावरण चेतना के क्षेत्र में सिंधु घाटी सभ्यता की सतत विकास प्रथाओं पर चर्चा कीजिए?

(10 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- शहरी नियोजन के क्षेत्रों में अनुकरणीय प्रणालियों का उल्लेख कीजिए।
- जल प्रबंधन के क्षेत्रों में अनुकरणीय प्रणालियों का उल्लेख कीजिए।
- पर्यावरण चेतना के क्षेत्रों में अनुकरणीय प्रणालियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता, विश्व की सबसे पुरानी शहरी सभ्यताओं में से एक है। यह व्यापक नियोजन, नियोजन में पर्यावरण के प्रति विचार आदि के लिए जानी जाती है और आधुनिक समाजों में सतत विकास प्रथाओं के लिए अनुकरणीय प्रणालियों के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता की अनुकरणीय प्रणालियाँ:

शहरी नियोजन:

- कुशल शहरी नियोजन:** मोहनजोदड़ो और हड्डपा के शहरों में दुर्ग तथा निम्न नगर, आयताकार जालीनुमा समकोण (ग्रिड) जैसा सड़क प्रतिरूप, सार्वजनिक भवन एवं जल निकासी व्यवस्था के साथ अच्छी तरह से व्यवस्थित अभिविन्यास थे। इसकी तुलना प्रायः लुटियन के शहरी नियोजन आदि से की जाती है।
- मिश्रित उपयोग विकास को प्राथमिकता:** सिंधु घाटी में मोहनजोदड़ो नामक नियोजित शहर का अभिविन्यास बहुत ही व्यवस्थित था, जिसमें अलग-अलग आवासीय, वाणिज्यिक और प्रशासनिक क्षेत्र थे।
- स्वच्छता:** हड्डपा में, वाहित मल का निपटान ठीक से रखी गई ईंटों से बनी भूमिगत नालियों के माध्यम से किया जाता था। शहर में मल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सोखने वाले गड्ढे (मलगर्त) भी थे।

जल प्रबंधन:

- जल-कुशल व्यवस्थाएँ:** प्राचीन सभ्यता में सार्वजनिक कुओं और स्वच्छता की उपस्थिति जल संरक्षण एवं स्वच्छता के महत्व को प्रदर्शित करती है, जिसका अनुकरण आधुनिक समाज कर सकता है।
- परिष्कृत जल प्रबंधन तकनीकें:** विस्तृत भूमिगत जल निकासी प्रणालियों, ढेंकली, साकिया और जलाशयों, का निर्माण।
- नहर संजाल:** सभ्यता विस्तृत नहर संजाल के साथ भी प्रदान करती है।

उदाहरण: अफगानिस्तान के शोर्तुघई में।

पर्यावरण समाजः

- अपशिष्ट प्रबंधन:** अच्छी तरह से अभिकल्पित की गई कचरा निपटान प्रणालियों और अपशिष्ट संग्रहण एवं निपटान के लिए अलग क्षेत्रों की उपस्थिति।
- स्वस्थ और सतत पर्यावरण को बढ़ावा दिया:** पुरातात्त्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि वे वृक्षारोपण करते थे, जैसा कि उनकी बस्तियों के पास वृक्षों के झुरमुटों की उपस्थिति से पता चलता है।

सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त इन सबक को आत्मसात करके, आधुनिक समाज के लोग सतत विकास के लिए प्रयास कर सकते हैं, पर्यावरण को संरक्षित और सुरक्षित रखते हुए वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों की भलाई सुनिश्चित कर सकते हैं, एवं सतत विकास लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

प्रश्न 6. हड्डपा सभ्यता के समय विद्यमान कला और शिल्प के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए।

(15 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- कला और शिल्प के विभिन्न रूपों, जैसे मृदभांड, मूर्तिकला, मुहरें, आभूषण तथा धातुकर्म का उल्लेख कीजिए।
- प्रत्येक रूप का संक्षिप्त विवरण या उदाहरण प्रदान कीजिए, तथा हड्डपा समाज में उनकी विशेषताओं और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड्डपा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में लगभग 3300-1300 ईसा पूर्व में विकसित हुई। यह अपनी उन्नत शहरी योजना, परिष्कृत जल निकासी प्रणालियों और विशिष्ट मृदभांड निर्माण एवं शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है।

हड्डपा सभ्यता की विग्रह कलाएँ और शिल्प:

मृदभांडः

- हड्डपा मृदभांड अपनी उच्च गुणवत्ता और विविध रूपों के लिए जाने जाते हैं।
- चित्रित मृदभांड जैसे कि हड्डपा और मोहनजोदड़ो जैसे स्थलों से पाए गए काले डिजाइन वाले लाल मृदभांड।
- सादे मृदभांड जिनमें विशिष्ट आकृतियाँ होती हैं जैसे बर्तन, सुराही और प्याले।
- वस्तुओं के संग्रह और उनके परिवहन के लिए मृदभांड अति आवश्यक थे। ये मृदभांड हड्डपा व्यापार और अर्थव्यवस्था की उन्नत स्थिति का संकेत देते हैं।

मूर्तिः

- हड्डपा की मिट्टी से बनी (टेराकोटा) मूर्तियाँ मानव और पशु के रूपों को उल्लेखनीय विवरण के साथ दर्शाती हैं।

सांस्कृतिक कारक:

- सांस्कृतिक बदलाव: धार्मिक प्रथाओं, मान्यताओं या सामाजिक मानदंडों में परिवर्तनों ने सामाजिक सामंजस्य और पहचान को बदल दिया होगा। मानकीकृत मुहरों और लिपि के उपयोग में गिरावट सांस्कृतिक एकरूपता के नुकसान का संकेत देती है।
- प्रवासन और एकीकरण: नई आबादी के आगमन या अन्य संस्कृतियों के साथ एकीकरण ने पारंपरिक हड्डप्पाई प्रथाओं को कमज़ोर कर दिया होगा। पुरातात्त्विक साक्ष्य, उत्तर वैदिक काल के दौरान इस क्षेत्र में इंडो-आर्यन प्रवासियों की उपस्थिति का संकेत देते हैं, जो संभवतः सांस्कृतिक गत्यात्मकता को प्रभावित करते हैं।

तकनीकी कारक:

- तकनीकी ठहराव: तकनीकी नवाचार की कमी या बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन के अभाव ने सभ्यता की प्रतिरोध क्षमता में बाधा उत्पन्न की होगी। कृषि तकनीकों या रक्षा तंत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की अनुपस्थिति ने सभ्यता को कमज़ोर बना दिया होगा।
 - बुनियादी ढाँचे का क्षय: परिष्कृत शहरी बुनियादी ढाँचे को बनाए रखने में उपेक्षा या अक्षमता ने शहरी केंद्रों के पतन में योगदान दिया होगा। मोहनजोदड़ो में खराब रखरखाव वाली जल निकासी प्रणालियों और ढहती संरचनाओं के साक्ष्य बुनियादी ढाँचे में गिरावट का संकेत देते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता का पतन; पर्यावरणीय बदलावों, आर्थिक दबाव, सामाजिक अशांति और तकनीकी ठहराव जैसी घटनाओं की वजह से हुआ। इसके पतन के बावजूद, इसकी विरासत प्रारंभिक शहरी विकास के प्रमाण के रूप में दिखाई देती है, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत और स्थायी प्रभाव के साथ मानव इतिहास को समृद्ध करती है।

प्रश्न 8. सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। इस सभ्यता के कुछ महत्वपूर्ण स्थलों से प्राप्त निष्कर्षों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (15 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- सिंधु घाटी सभ्यता की मुख्य विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
- साथ ही, सभ्यता के अब तक खोजे गए कुछ महत्वपूर्ण स्थलों और निष्कर्षों का विवरण भी दीजिए।

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड्डप्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन दुनिया की सबसे प्रारंभिक और सबसे व्यापक सभ्यताओं में से एक थी, जो लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व। इसका नाम सिंधु नदी के नाम पर रखा गया है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र से होकर बहती है।

सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं:

- शहरी नियोजन: सिंधु घाटी सभ्यता के शहर अच्छी तरह से नियोजित थे, सड़कें समकोणीय जालीनुमा (ग्रिड) अभिविन्यास में निर्मित की गई थीं और इमारतें मानकीकृत इंटों से निर्मित थीं।
- कृषि: सिंधु घाटी सभ्यता एक कृषि अधिशेष आधारित समाज था, जहाँ लोग गेहूँ, जौ और अन्य फ़सलें उगाते थे। वे गाय, भेड़ और बकरी जैसे पशुधन भी पालते थे।
- व्यापार और वाणिज्य: इस सभ्यता का एक समृद्ध व्यापार नेटवर्क था, जिसमें सभ्यता के भीतर और अन्य क्षेत्रों के साथ वस्तुओं का व्यापार होता था। पुरातात्त्विक साक्ष्य बताते हैं कि वे मेसोपोटामिया और मिस्र जैसे दूरदराज के क्षेत्रों के साथ व्यापार करते थे।
- लेखन प्रणाली: सिंधु घाटी सभ्यता की एक लिपि थी, जिसे अभी तक पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है। ऐसा माना जाता है कि इसका इस्तेमाल प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
- कला और शिल्प: इस सभ्यता ने विविध प्रकार की कला और शिल्प का उत्पादन किया, जिसमें मृद्भांड, आभूषण एवं मूर्तियाँ शामिल थीं।
- सामाजिक स्तरीकरण: सिंधु सभ्यता के समाज में सामाजिक स्तरीकरण देखने को मिलता था, जिसमें अलग-अलग वर्ग, व्यावसायिक समूह और पदानुक्रमिक संरचनाएँ थीं, जो आर्थिक असमानताओं, व्यावसायिक विशेषज्ञता एवं सामाजिक भेदभाव को दर्शाती थीं।
- आध्यात्मिक प्रथाएँ: सिंधु सभ्यता के लोग प्रकृति की पूजा, उर्वरता हेतु पूजा (Reverence for fertility) और देवियों की पूजा, आनुष्ठानिक समारोहों, पवित्र अनुष्ठानों एवं प्रतीकात्मक प्रसाद के साथ धर्म के एक रूप का पालन करते थे।

महत्वपूर्ण स्थल और निष्कर्ष:

- हड्डप्पा: वर्तमान पाकिस्तान में स्थित, हड्डप्पा सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े शहरों में से एक था। यहाँ पुरातात्त्विक अन्वेषण से सुनियोजित सड़कें, सार्वजनिक स्नानगार और अन्य संरचनाएँ सामने आई हैं।
- मोहनजोदड़ो: वर्तमान पाकिस्तान में स्थित मोहनजोदड़ो भी इस सभ्यता का एक और प्रमुख शहर था। यहाँ की खुदाई में एक बड़ा अन्नागार, सार्वजनिक इमारतें और एक जटिल जल प्रबंधन प्रणाली का पता चला है।
- धौलावीरा (गुजरात): धौलावीरा इस सभ्यता के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक माना जाता है। इसमें एक सुनियोजित जल प्रबंधन प्रणाली और पत्थर से बनी बड़ी इमारतें थीं।
- लोथल (गुजरात): लोथल व्यापार और वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ की खुदाई से एक गोदी (बंदरगाह) और अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार के साक्ष्य मिले हैं।

- **राखीगढ़ी (हरियाणा):** यह सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े स्थलों में से एक है। यहाँ खुदाई से एक जटिल जल प्रबंधन प्रणाली के साथ एक सुनियोजित शहर का पता चला है।
- **कालीबंगन (राजस्थान):** अपनी अद्वितीय अग्नि वेदिकाओं के लिए जाना जाता है, जो आनुष्ठानिक प्रथाओं, जुते हुए खेत, चूड़ियों और शहरी नियोजन तथा कृषि गतिविधियों दोनों के साक्ष्य दर्शाता है।
- **बनावली (हरियाणा):** इस स्थल से दुर्गीकृत बस्ती, आवासीय क्षेत्र, और शिल्प उत्पादन, व्यापार एवं सांस्कृतिक प्रथाओं के साक्ष्य मिले हैं। सिंधु घाटी सभ्यता एक अत्यंत उन्नत और परिष्कृत सभ्यता थी, जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में विकसित हुई थी। सुनियोजित शहर, उन्नत जल निकासी और सफाई व्यवस्था, मानकीकृत बजन तथा माप का उपयोग आदि जैसी विभिन्न खोजों ने सभ्यता की तकनीकी उन्नति एवं सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित किया।

प्रश्न 9. सिंधु घाटी सभ्यता के शहरी नियोजन और जल निकासी प्रणाली तथा आधुनिक शहरीकरण में इनकी प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए। (10 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय योजना और जल निकासी व्यवस्था के बारे में लिखिए।
- आधुनिक शहरीकरण में इसकी प्रासंगिकता लिखिए।

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता, जो 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली, अपने लोगों की सरलता और संगठनात्मक कौशल का प्रमाण है। मोहनजोदड़ो और हड्डप्पा जैसे उनके शहरी केंद्रों ने शहरी नियोजन तथा जल निकासी प्रणालियों में उल्लेखनीय प्रगति को प्रदर्शित किया, जो 21वीं सदी में सतत एवं स्वस्थ शहरों के विकास के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

सिंधु घाटी सभ्यता का शहरी नियोजन और जल निकासी व्यवस्था:

शहरी नियोजन:

- **समकोणीय जालीनुमा प्रतिरूप:** सिंधु सभ्यता के शहरों को एक व्यावहारिक और कुशल समकोणीय जालीनुमा (ग्रिडनुमा) नियोजन के साथ अभिकल्पित किया गया था, जिससे आवागमन, स्वास्थ्य एवं शहरी संगठन में सुधार हुआ।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़कें इस समकोणीय जालीनुमा अभिविन्यास का उदाहरण हैं, जिसमें चौड़ी, सीधी सड़कें समकोण पर एक दूसरे को काटती हैं।

- **दुर्गा और निचला शहर:** इन शहरों में 'दुर्गा' और 'निचले शहर' में विभाजन सामाजिक स्तरीकरण तथा प्रभावी जल प्रबंधन को दर्शाता है।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो में, दुर्गा में महान स्नानागार जैसी महत्वपूर्ण इमारतें थीं, जो निचले शहर से ऊपर थीं, जहाँ आम जनता रहती थी।

- **मानकीकृत ईंटें:** निर्माण कार्य में ईंटों के एक समान आकार ने स्थिरता और एकरूपता सुनिश्चित की, जो उन्नत योजना को दर्शाता है।

उदाहरण: हड्डप्पा और मोहनजोदड़ो में सुसंगत 4:2:1 के अनुपात के साथ ईंटों का इस्तेमाल किया गया था, जिसने इन शहरों के व्यवस्थित रूप में योगदान दिया।

- **जल प्रबंधन:** साक्ष्य बताते हैं कि सभ्यता को जल प्रबंधन की परिष्कृत समझ थी।

उदाहरण: धौलावीरा की परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली, जिसमें जलाशय और नालियाँ शामिल हैं, जल संसाधनों के दोहन एवं वितरण में सभ्यता की विशेषज्ञता को व्यक्त करती है।

- **सार्वजनिक भवन:** पुरातत्त्वविदों ने अन्नागार और सभा भवन सहित बड़ी सार्वजनिक इमारतों का पता लगाया है, जो केंद्रीकृत प्राधिकरण और संभवतः संप्रदाय से जुड़ी गतिविधियों का संकेत देती हैं।

जल निकासी की व्यवस्था:

- **परिष्कृत डिजाइन:** सिंधु घाटी के शहरों, जैसे मोहनजोदड़ो और हड्डप्पा की जल निकासी प्रणाली अपने समय के लिए उल्लेखनीय रूप से उन्नत थी। इसमें ईंटों से बनी नालियों का एक संजाल शामिल था, जो पत्थरों या ईंटों से ढकी हुई थी और शहरों की सड़कों के नीचे से होकर गुजरती थी।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो की जल निकासी व्यवस्था ने वाहित मल और अन्य कचरे के निपटान की सुविधा दी, जिससे गंदगी का जमाव रुका तथा जलजनित बीमारियों का खतरा कम हुआ।

- **बाढ़ की रोकथाम:** जल निकासी प्रणाली का एक प्राथमिक उद्देश्य बाढ़ को रोकना था, विशेषकर मानसून के मौसम में।

उदाहरण: मोहनजोदड़ो की अच्छी तरह से निर्मित नालियों ने अतिरिक्त पानी को तेजी से निकालने में मदद की, जिससे जलभराव और सड़कों एवं संरचनाओं के जलमग्न होने के जोखिम को कम करने में मदद मिली।

- **सोखने वाले गड्ढे और मल गर्त:** घरों में मुख्य नालियों में जाने से पहले अपशिष्ट जल को छानने के लिए सोखने वाले गड्ढों और मल गर्तों का उपयोग करने से अवरोधन कम होता था तथा पानी साफ रहता था। यह विशेषता मोहनजोदड़ो के अलग-अलग घरों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

- **तकनीकी नवाचार:** जल निकासी प्रणाली के निर्माण के लिए उस समय के लिए एक उन्नत अभियांत्रिकी तकनीकों की आवश्यकता थी। मानकीकृत पक्की हुई ईंटों, सटीक माप और सावधानीपूर्वक शिल्प कौशल का उपयोग सिंधु घाटी सभ्यता के तकनीकी परिष्करण को दर्शाता है।

- वर्तमान समय की निरंतरता: दोनों संस्कृतियों के लोगों ने कई धार्मिक विशेषताओं को शामिल किया जो बाद में वर्तमान धर्म-हिंदू धर्म के समाहित हो गई।

उदाहरण: सिंधु संस्कृति के पशुपति वर्तमान समय के भगवान शिव के पर्याय लगते हैं।

इस तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों संस्कृतियों में विभिन्न क्षेत्रों में काफी समानताएँ और विभिन्नताएँ थीं, लेकिन वैदिक संस्कृति की तुलना में सिंधु घाटी की संस्कृति थोड़ी अधिक विकसित अवस्था में थी।

सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक काल की संस्कृति के बीच विभिन्नताएँ:

सांस्कृतिक मानदंड	सिंधु घाटी सभ्यता	वैदिक संस्कृति
नगरीकरण का स्तर	मुख्य रूप से शहरी, जैसा कि इसकी नगर-योजना से स्पष्ट है, पक्की हुई ईर्टों से बने योजनाबद्ध घर, जल निकासी प्रणाली, अन्नागार, अच्छी तरह से नियोजित शहर- दो अच्छी तरह से बनाए गए भाग - दुर्ग और निचला शहर, इत्यादि जैसे - हड्डपा और मोहनजोदहो नगर।	वैदिक (प्रारंभिक) संस्कृति ग्रामीण थी, ऋग्वैदिक काल में नगर लगभग न के बराबर थे। ऋग्वैदिक आर्य मिट्टी की दीवारों से सुरक्षित दुर्गांकृत स्थानों में रहते थे।
आर्थिक जीवन, व्यापार और व्यवसाय	सिंधु सभ्यता में आंतरिक और बाह्य व्यापार, शिल्प तथा उद्योग अर्थव्यवस्था के मुख्य स्रोत थे, जिसके परिणामस्वरूप लोगों का जीवन समृद्ध एवं उन्नत था। उदाहरण: मेसोपोटामियाई स्रोतों में वर्णित "मेलुहा" (सिंधु क्षेत्र), लोथल में गोदी (बंदरगाह) की उपस्थिति और बालाकोट, रंगपुर आदि में समुद्री बंदरगाह।	प्रारंभिक वैदिक समाज एक पशुपालक समाज था, जिसमें पशुपालन प्राथमिक गतिविधि थी। बाद में, लोहे के उपयोग की शुरुआत के साथ कृषि मुख्य व्यवसाय बन गई।
धर्म	हड्डपा के लोग पशुपति (आदि शिव), मातृदेवी, पशु, सौंप और प्रकृति की पूजा करते थे। कुछ स्थलों से अग्नि-वैदिक्याँ मिली हैं। मूर्ति पूजा को सिंधु घाटी संस्कृति से जोड़ा जा सकता है। यहाँ मंदिरों का अभाव था। मृतकों को दफनाने की प्रथा थी, कुछ स्थलों पर दाह संस्कार का भी उल्लेख मिलता है।	प्रारंभिक वैदिक समाज में न तो मंदिर थे और न ही मूर्ति पूजा। यह प्रकृतिवादी बहुदेववाद की तर्ज पर था, जहाँ यज्ञों के माध्यम से प्रकृति की शक्तियों की पूजा की जाती थी। उत्तर वैदिक धर्म ने बलि अनुष्ठानों और यज्ञों के इस पंथ को और मजबूत किया। प्रजापति, विष्णु, रुद्र आदि जैसे नए देवताओं का उदय हुआ।
शिल्प, प्रौद्योगिकी, धातु आदि का उपयोग	सिंधु संस्कृति विशुद्ध रूप से 'ताम्र-कांस्य' संस्कृति थी। मिट्टी की ढलाई, मनका बनाने (चन्हुदड़ो और लोथल) जैसे शिल्प का कार्य किया जा रहा था। आभूषण निर्माण (सोना, चांदी, सेलखड़ी), धातुकर्म की कला, सूत कातना, बुनाई और नाव बनाना भी प्रचलित था। इस संस्कृति में भी मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया जाता था। इस सभ्यता के दौरान वजन और माप की एक मानकीकृत प्रणाली का उपयोग किया जाता था।	प्रारंभिक वैदिक समाज मुख्य रूप से ताम्र पाषाण काल का था। हमें केवल उत्तर वैदिक काल में लोहे के उपयोग का साक्ष्य मिलता है। कला और शिल्प का विकास हो रहा था, लेकिन सिंधु घाटी संस्कृति के स्तर पर नहीं। विभिन्न शिल्पों के श्रेष्ठियाँ (व्यापारियों के संघ) के साक्ष्य मिलते हैं। रथ निर्माण, काँच निर्माण, कताई और बुनाई इत्यादि प्रसिद्ध थे।
भाषा	सिंधु लिपि अभी भी पढ़ी नहीं जा सकती है और हम इसके साहित्यिक विकास के बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं।	वैदिक संस्कृत भारत की सभी गैर-द्रविड़ भाषाओं की जननी है और लगभग सभी भारतीय भाषाएँ इससे गहराई से प्रभावित हैं।
कृषि	कपास उत्पादन करने वाली सबसे पुरानी ज्ञात सभ्यता थी। गेहूँ, जौं, मटर, सरसों और यहाँ तक कि चावल (लोथल) सहित कई फ़सलें उगाई जाती थीं। पशु भी पालतू बनाए जाते थे। कालीबंगा से प्राप्त एक जुते हुए खेत से लकड़ी के हल के उपयोग की संभावना का पता चलता है।	ऋग्वैदिक ग्रंथों में केवल यव या जौं और लकड़ी के हल का उल्लेख है जो समाज की पशुपालक प्रकृति को दर्शाता है। उत्तर वैदिक काल में लोहे के हल का उपयोग शुरू हुआ और इससे सभ्यता का विस्तार गंगा के मैदानों में हुआ, जिसके परिणामस्वरूप गेहूँ और चावल मुख्य आहार बन गए।
ललित कला	मृदभांड (काले और लाल रंग के मृदभांड: BRW), मूर्तियाँ- दाढ़ी वाला पुरुष (तथाकथित पुजारी), लाल बलुआ पत्थर का धड़, नृत्य करने वाली लड़की (लुम्म मोम तकनीक का उपयोग), मुहरें आदि।	मुहरों का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया, वैदिक काल के विशिष्ट मृदभांडों को चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) के नाम से जाना जाता है।

दोनों संस्कृतियाँ, भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास में दो सबसे पुरानी एवं सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। पीपल के पेड़ की पूजा से लेकर "सत्यमेव जयते" और "वसुधैव कुटुंबकम" के मूल्यों तक, सामान्य रूप से भारतीय जीवन शैली इन सांस्कृतिक प्रभावों से काफी प्रेरित होती रही है।

प्रश्न 11. चर्चा कीजिए कि वैदिक काल के अधिवास प्रतिरूप, कृषि और सामान्य जीवन शैली पर जलवायु एवं भौगोलिक कारकों का क्या प्रभाव पड़ा?

(15 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- चर्चा कीजिए कि वैदिक काल के अधिवास प्रतिरूप (settlement pattern) कृषि और सामान्य जीवन शैली पर जलवायु एवं भौगोलिक कारकों का क्या प्रभाव पड़ा।

उत्तर: वैदिक काल, जिसका विस्तार लगभग 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक है, प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रारंभिक चरण को दर्शाता है, जिसकी विशेषता हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों, वेदों आदि की रचना है। प्रारंभिक वैदिक सभ्यता का उद्भव, जिसमें घुमंतू चरवाहों ने सिंधु और गंगा की उपजाऊ नदी घाटियों के किनारे बसे कृषि समुदायों का मार्ग प्रशस्त किया।

अधिवास प्रतिरूप

1. नदी से निकटता:

- भौगोलिक कारक:** उपजाऊ बाढ़ के मैदानों और प्रचुर जल आपूर्ति के कारण बस्तियाँ मुख्य रूप से सिंधु, सरस्वती, गंगा तथा यमुना जैसी प्रमुख नदियों के किनारे बसी थीं।
- जलवायु कारक:** पूर्वीनामित मानसून चक्र ने पीने के पानी, कृषि और दैनिक गतिविधियों के लिए विश्वसनीय जल स्रोतों की उल्लंघना सुनिश्चित की।
उदाहरण: ऋग्वेद जैसे प्रारंभिक वैदिक ग्रंथों में सरस्वती नदी के किनारे बस्तियों का उल्लेख है, जो वैदिक संस्कृति के एक संपन्न केंद्र के रूप में इसके महत्व को उजागर करता है।

2. भूभाग एवं संसाधन:

- भौगोलिक कारक:** मैदानों, जंगलों और पहाड़ों सहित विविध स्थलाकृति ने बस्तियों के वितरण तथा आकार को प्रभावित किया।
- जलवायु कारक:** मध्यम जलवायु और समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों वाले क्षेत्रों में बस्तियों का घनत्व अधिक था।
उदाहरण: पंजाब और हरियाणा के मैदानी इलाके अपनी उपजाऊ मिट्टी तथा अनुकूल जलवायु के कारण घनी आबादी वाले थे, एवं कृषि समुदायों को बढ़ावा देते थे।

कृषि

1. फसलों का उत्पादन (crop cultivation):

- भौगोलिक कारक:** नदी घाटियों की उपजाऊ जलोदय मिट्टी; जौ, गेहूँ और बाद में चावल जैसी प्रमुख फसलों को उगाने के लिए आदर्श थी।
- जलवायु कारक:** फसल की वृद्धि के लिए मानसून की बारिश आवश्यक थी, जिससे सिंचाई और अन्य जरूरतों के लिए पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित होती थी।
उदाहरण: ऋग्वेद में जौ (यव) की कृषि का उल्लेख प्रारंभिक वैदिक कृषि में इस फसल के महत्व को व्यक्त करता है।

2. सिंचाई और जल प्रबंधन:

- भौगोलिक कारक:** नदियों की निकटता से सरल सिंचाई तकनीकों का विकास संभव हुआ, जिससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई।
- जलवायु कारक:** वर्षा में मौसमी विविधता के कारण पूरे वर्ष कृषि को बनाए रखने के लिए प्रभावी जल प्रबंधन आवश्यक हो गया।
उदाहरण: ऋग्वेद की ऋचाओं में नहरों और कुओं के उपयोग का उल्लेख है, जो मानसून की वर्षा के पूरक के रूप में प्रारंभिक सिंचाई पद्धतियों का संकेत देते हैं।

सामान्य जीवन शैली

1. घुमंतू जीवन से स्थायी जीवनशैली की ओर:

- भौगोलिक कारक:** प्रारंभिक वैदिक समुदाय अर्द्ध-खानाबदोश थे, जो पशुपालन पर निर्भर थे, लेकिन उपजाऊ नदी घाटियों ने स्थायी कृषि आधारित जीवन की ओर परिवर्तन को प्रोत्साहित किया।
- जलवायु कारक:** स्थिर जलवायु परिस्थितियों ने फसलों की खेती और पशुओं के पालन-पोषण को बढ़ावा दिया, जिससे खानाबदोशी की आवश्यकता कम हो गई।
उदाहरण: पशुचारण से कृषि प्रधान समाज की ओर परिवर्तन ऋग्वेद में प्रतिबिंबित होता है, जहाँ प्रारंभिक स्तोत्र पशुधन पर केंद्रित हैं, जबकि बाद के ग्रंथों में फसलों की पैदावार पर ज़ोर दिया गया है।

2. आहार एवं खाद्य सुरक्षा:

- भौगोलिक कारक:** वर्षों और नदियों सहित विविध प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने अनाज, फल, सब्जियाँ एवं मछली इत्यादि का विविध आहार उपलब्ध कराया।
- जलवायु कारक:** सतत वर्षा प्रतिरूप ने नियमित फसल सुनिश्चित की, जिससे खाद्य सुरक्षा और जनसंख्या वृद्धि में योगदान मिला।
उदाहरण: ऋग्वेद में दूध, मक्खन और अनाज सहित विभिन्न खाद्य पदार्थों का उल्लेख है, जो कृषि तथा पशुपालन द्वारा समर्थित संतुलित आहार का संकेत देता है।

3. धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रथाएँ:

- भौगोलिक कारक: प्राकृतिक परिदृश्य ने धार्मिक विश्वासों को प्रभावित किया, इस काल में नदियों, पहाड़ों और पेड़ों को प्रायः पवित्र माना जाता था।
 - जलवायु कारक: मौसमी परिवर्तन धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों के समय को निर्धारित करते थे, जो प्रायः कृषि चक्र से जुड़े हुए होते थे।
- उदाहरण:** ऋग्वेद में प्राकृतिक तत्वों से जुड़े देवताओं, जैसे- इंद्र (वर्षा के देवता) और अग्नि (अग्नि के देवता) को समर्पित कई सूक्त हैं, जो धर्म और पर्यावरण के मध्य गहरे संबंध को दर्शते हैं।

4. आर्थिक क्रियाकलाप:

- भौगोलिक कारक: खनिज, लकड़ी और उपजाऊ भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने खेती, पशुपालन तथा व्यापार सहित विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया।
- जलवायु कारक: अनुकूल मौसम की स्थिति ने निरंतर और अधिशेष उत्पादन को सक्षम बनाया, जिससे व्यापार तथा आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिला।

उदाहरण: वैदिक ग्रंथों में व्यापार मार्गों और बाजारों में कृषि एवं हस्तशिल्प उत्पादों द्वारा समर्थित एक सक्रिय अर्थव्यवस्था का संकेत देते हैं। निष्कर्षतः, वैदिक काल के दौरान जलवायु और भौगोलिक कारकों ने अधिवास प्रतिरूप, कृषि पद्धतियों एवं समग्र जीवन शैली को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। इन तत्वों ने प्रारंभिक भारतीय समाज के विकास को आकार दिया तथा एक समृद्ध संस्कृति को बढ़ावा दिया जिसने इस क्षेत्र में भविष्य के सभ्यताओं की आधारशिला रखी।

प्रश्न 12. वैदिक समाज और धर्म की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? क्या आपको लगता है कि इनमें से कुछ विशेषताएँ वर्तमान भारत में भी विद्यमान हैं? (10 अंक)

प्रश्न की मुख्य माँग:

- सारणीबद्ध प्रारूप में वैदिक समाज और धर्म की विशेषताओं को समझाइए।
- अंत में वैदिक काल की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जो आज भी भारत में विद्यमान हैं।

उत्तर: वैदिक काल (प्रारंभिक वैदिक काल: 1500-1000 ईसा पूर्व और उत्तर वैदिक काल: 1000 - 600 ईसा पूर्व) ने भारतीय समाज और धर्म के कई पहलुओं की आधारशिला रखी जो निरंतर समकालीन भारत को प्रभावित करते रहते हैं। वैदिक परंपराएँ भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास और संस्कृति में गहराई से निहित हैं तथा आधुनिक भारतीय समाज एवं धर्म के विभिन्न पहलुओं पर स्थायी प्रभाव डालती है।

वैदिक समाज की विशेषताएँ:

विशेषता	प्रारंभिक वैदिक सभ्यता	उत्तर वैदिक सभ्यता
राजनीतिक संगठन	प्रारंभिक वैदिक सभ्यता शासन की जनजातीय प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें कोई क्षेत्रीय प्रशासन नहीं था। राजा, जिसे राजन कहा जाता था, को समिति नामक जनजातीय सभा द्वारा चुना जाता था। अन्य तीन सभाएँ- सभा, विद्धि और गण भी जनजाति के प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।	उत्तर वैदिक सभ्यता जनजातीय प्रणाली से क्षेत्रीय प्रणाली में परिवर्तित हो गई। शासन प्रणाली वंशानुगत हो गई। विद्धि और गण का महत्व समाप्त हो गया। जनपद को महत्व दिया गया और अंततः महाजनपद का उदय हुआ।
परिवार और संबंध	पारिवारिक संबंध सामाजिक संरचना का आधार थे, जिसमें मनुष्य की पहचान उसके कुल से जुड़ी हुई होती थी। ऋग्वेद में परिवार शब्द का उल्लेख बहुत कम मिलता है; बल्कि इसमें गृह शब्द का प्रयोग किया गया है जो बहुत बड़े संयुक्त परिवार को दर्शाता है।	परिवार के पुरुष सदस्यों के अधिकारों को मजबूत करने के साथ पारिवारिक संबंध अभी भी एक केंद्रीय विशेषता थी। गोत्र की संस्था सामने आई जिसने विवाहों में गोत्र बहिर्विवाह नियमों की स्थापना की।
सामाजिक भेदभाव	यह मुख्यतः समतावादी समाज था। चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) विद्यमान थे, जिनमें बहुत अधिक पदानुक्रम नहीं था और वर्ण व्यवसाय पर आधारित था।	जनजातीय समाज जन्म के आधार पर चतुर्वर्ण व्यवस्था में विभाजित हो गया। पदानुक्रम में सबसे ऊपर ब्राह्मण को रखा गया, उसके बाद क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को रखा गया, जिससे पदानुक्रम में कठोरता आई।
महिलाओं की स्थिति	महिलाओं को प्रमुखता दी गई और वे विद्धि एवं सभा की जनजातीय सभाओं में भाग ले सकती थीं। शियों द्वारा क्रत्याओं की रचना के उदाहरण मिलते हैं (जैसे लोपामुद्रा)। विद्धवा पुनर्विवाह की प्रथा का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।	कठोर सामाजिक प्रणाली ने महिलाओं की स्वतंत्रता पर गंभीर रूप से अंकुश लगा दिया। महिलाओं को वेद पढ़ने और समाज के निर्णय लेने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। पितृसत्तात्मक मानदंड मजबूत हुए।
अर्थव्यवस्था	यह एक पशुपालक अर्थव्यवस्था तथा अर्द्ध-खानाबदोश अर्थव्यवस्था थी।	इस काल में समाज अधिक व्यवस्थित था। लोग छोटे-छोटे समूहों में रहते थे और जीवनयापन के लिए कृषि को अपनाते थे। उनके पास ज्ञानीय थीं जिन पर वे फ़सलें उगाते थे और अपने लिए अनाज की व्यवस्था करते थे।



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

MAINS WALLAH

प्रश्नोत्तर शृंखला

सामान्य अध्ययन-II

यूपीएससी के पाठ्यक्रम तथा प्रश्नों की नवीन प्रवृत्तियों पर²
आधारित 250 से अधिक प्रश्नों का संकलन

विषय-सूची

भारत की राजव्यवस्था और संविधान	1-154
1. संवैधानिक ढाँचा	3
2. भारत के संविधान की मुख्य विशेषताएँ	22
3. भारतीय संवैधानिक योजनाओं की तुलना	39
4. भारत की संसद	49
5. राज्य विधानसभा और स्थानीय स्व-शासन	69
6. कार्यपालिका और न्यायपालिका की संरचना, संगठन तथा कार्यप्रणाली	92
7. संवैधानिक, सांविधिक, नियामक और अर्ध न्यायिक निकाय	116
8. जन प्रतिनिधित्व अधिनियम	139
9. विविध	144
भारत की शासन व्यवस्था	155-210
1. शासन के महत्वपूर्ण पहलू	157
2. नागरिक घोषणा पत्र और सामाजिक लेखा परीक्षण तंत्र	181
3. लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका	189
4. स्वयं सहायता समूहों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों की भूमिका	197
सामाजिक न्याय	211-270
1. गरीबी और भुखमरी से संबंधित मुद्दे	213
2. सुभेद्य वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ	227
3. स्वास्थ्य, शिक्षा तथा मानव संसाधन	256
अंतर्राष्ट्रीय संबंध	271-370
1. भारत और उसके पड़ोसी देश	273
2. क्षेत्रीय, द्विपक्षीय और वैश्विक समूह	294
3. भारतीय प्रवासी और नीतियाँ	331
4. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ और एजेंसियाँ	342



ONLYiAS
BY PHYSICS WALLAH

MAINS WALLAH

प्रश्नोत्तर शृंखला

सामान्य अध्ययन-III

यूपीएससी के पाठ्यक्रम तथा प्रश्नों की नवीन प्रवृत्तियों पर^{आधारित 250 से अधिक प्रश्नों का संकलन}

विषय-सूची

आर्थिक विकास.....	1-186
1. भारतीय अर्थव्यवस्था एवं संबंधित मुद्दे.....	3
2. अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत.....	23
3. उद्योग और बुनियादी ढाँचा.....	55
4. समावेशी विकास	104
5. कृषि	111
6. खाद्य सुरक्षा और प्रसंस्करण.....	154
7. ऊर्जा	174
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	187-280
1. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी: विकास एवं अनुप्रयोग	189
2. जैव प्रौद्योगिकी.....	199
3. अंतरिक्ष कार्यक्रम.....	210
4. सूचना प्रौद्योगिकी	228
5. नई प्रौद्योगिकी का विकास.....	248
6. प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण	265
7. अधिनियम एवं नीतियाँ	271
पर्यावरण एवं जैव विविधता	281-384
1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	283
2. पर्यावरण प्रदूषण और अवनयन	298
3. जलवायु परिवर्तन	304
4. सतत विकास	318
5. पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता.....	330
6. पर्यावरण संबंधी मुद्दे और शासन.....	353

आपदा प्रबंधन 385-428

1. आपदाएँ: प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाएँ.....	387
2. आपदा प्रबंधन	406

आंतरिक सुरक्षा..... 429-526

1. आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ	431
2. बाहरी राज्य और गैर राज्य कारक	490
3. सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ.....	497
4. वामपंथी उग्रवाद	510
5. सुरक्षा बल और उनका अधिदेश	517



ONLYiAS
BY PHYSICS WALLAH

MAINS WALLAH

प्रश्नोत्तर शृंखला

सामान्य अध्ययन-IV

यूपीएससी के पाठ्यक्रम तथा प्रश्नों की नवीन प्रवृत्तियों पर^{आधारित 250 से अधिक प्रश्नों का संकलन}

विषय-सूची

नैतिकता, ईमानदारी और योग्यता 1-270

1. नैतिकता और मानव अंतर्संबंध	3
2. अभिवृत्ति और अभिक्षमता	45
3. सिविल सेवाओं के लिए आधारभूत मूल्य	83
4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता	108
5. नैतिक विचारकों का योगदान	136
6. लोक प्रशासन में सिविल सेवकों के मूल्य	175
7. लोक प्रशासन में नैतिकता	189
8. शासन व्यवस्था में ईमानदारी	230

केस स्टडीज

271-398

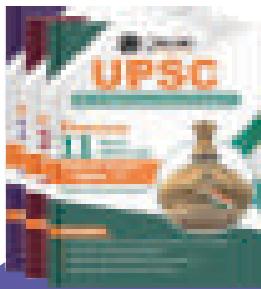


अन्य पुस्तके एवं कार्यक्रम



BOOKS

व्यापक कवरेज



BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र
(PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)



FREE MATERIAL

उडान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)



FREE MATERIAL

उडान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)



FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न



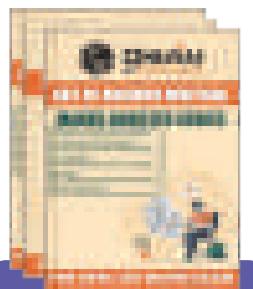
CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी



CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन



FREE MATERIAL

क्विक रिवीज़न बुकलेट



TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट



TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

₹ 429/-

ISBN 978-81-975805-8-1



9 788197 580581

— All Content Available in **Hindi and English** —

Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Lucknow, Patna